स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय खण्ड
(चतुर्थ पत्र - छायावादोत्तर हिन्दी काव्य)

- डॉ० मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जनता कोशी महाविद्यालय

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना तीसरा सप्तक के प्रसिद्ध कवि हैं। उनकी ख्याति कवि होने के साथ-साथ लेखक, पत्रकार एवं नाटककार के रूप में भी है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - खूंटियों पर टंगे लोग, काठ की घण्टियाँ, बाँस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी, कविताएँ -1, कविताएँ -2, जंगल का दर्द।

उनकी लोकप्रिय कविताएँ हैं - काफी हाउस में एक मेलोड्रामा, अहं से मेरे बड़ी हो तुम, विगत प्यार, लिपटा रजाई में, मैंने कबकहा। उपन्यास - 'उड़े हुए रंग', लघु उपन्यास - 'खोया हुआ जल', पागल कुत्तों का मसीहा।

कहानी संग्रह - 'अंधेरे पर अंधेरा'
नाटक - बकरी, बाल साहित्य - भौं-भौं-खों-खों, लाख की नाक, 'बतूता का जूता, महंगू की टाई।
यात्रा-वृतांत - 'कुछ रंग कुछ गंध' आदि।

सक्सेना जी नया प्रयोग के साथ ही स्वयं को सत्य के साथ जोड़ते हुए लिखते हैं -

"मैं नया कवि हूँ -
इसी से जानता हूँ
सत्य की चोट बहुत गहरी होती है।,,

नयी कविता के रचनाकार लीक से हटकर रचनाएँ करते थे, इस सम्बन्ध सक्सेना जी लिखते हैं -

"लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं
हमें तो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना आम आदमी के साथ भौतिक रूप से और संवेदना के स्तर पर भी जुड़े हुए थे। वे 'कुआनो नदी' में लिखते हैं -

"मैं भागता हूँ और देखता हूँ
यह खेतिहर मज़दूर भूख से मर गया
यह चौपाए के साथ बाढ़ में बह गया
यह एक छोटे रोजगार के सहारे

"जिंदगी काट ले जाना चाहता था
पर जाने क्यों रेल से कट गया"

सर्वेश्वर मनुष्य द्वारा रचित विषमता के विरोधी स्वर थे। वे सरल और सहज भाषा में व्यंग्य करते भी नजर आते हैं —

"लोकतंत्र को जूते की तरह
लाठी में लटकाए
भागे जा रहे हैं सभी
सीना फुलाए।"

सर्वेश्वर की कविताओं में प्रतिरोध, संवेदन, प्रेम और प्रकृति के साथ-साथ बाल-मनोविज्ञान के दृश्य भी दृष्टिगत होते हैं। उनकी एक प्रसिद्ध बाल कविता है - 'मेले में लल्ला' जिसकी कुछ पंक्तियाँ देख सकते हैं —

"कलकत्ते में खो गए लल्ला
कहीं अगाड़ी, कहीं पुछल्ला।
घर में बैठे वे चुपचाप
करते रामनाम का जाप।
भागे सुन मेले का हल्ला
कहीं अगाड़ी कहीं पुछल्ला।"

इसी प्रकार 'बतूता का जूता' में वे लिखते हैं —

"इब्नबतूता पहन के जूता
निकल पड़े तूफान में
थोड़ी हवा नाक में घुस गई
घुस गई थोड़ी कान में।"

बाल कविता के सिद्धहस्त कवि सर्वेश्वर व्यंग्यात्मक शब्दों द्वारा बालकों को लुभाते हैं और अपनी पंक्तियों के माध्यम से मनोरंजन भी करते हैं —

"नेता के दो टोपी
और गदहे के दो कान
टोपी अदल-बदलकर पहने
गदहा या हैरान।

नेता उड़ गए, टोपी उड़ गई
उड़ गए उनके कान,
बीच सभा में खड़ा हो गधा
गदहा सीना तान!"